[Conference- Innovation in Music & Dance :January,2015] ISSN- 2350-0530(O) 2394-3629(P)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i1SE.2015.3443

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

कदम से कदम ताल मिलाकर प्रगति के पथ पर साथ चलती कलाएँ

डॉ. मनोरमा चौहान
विभागाध्यक्षा चित्रकला – विभाग
शास. महारानी लक्ष्मीबाई कन्या स्नात. महा. इन्दौर (म.प्र.)

"सौन्दर्य का पहला और सीधा सम्बन्ध आखों द्वारा किया जाने वाला अनुभव है। सर्वप्रथम जब मानव ने अपनी आँखें खोली तो उसने अपने आप को प्रकृति की गोद में पाया। चहुँ ओर प्राकृतिक सौन्दर्य बिखरा हुआ था। पानी, झरने, पशु–पक्षियों का कलरव, चादर ओढ़े हरि–हरि वसुन्धरा। मानव ने इसी प्राकृतिक सौन्दर्य से प्रेरणा ग्रहण की, पक्षियों और कल–कल बहते झरने, हवा का मधुर संगीत, पशुओं के शारिरीक हाव भाव से नृत्य का रसास्वादन किया। इसी प्रेरणा के सहारे मानव, सभ्यता का कलाओं के साथ विस्तार करता गया। आज यह प्रेरणा के सहारे मानवमन की सूज बूझ, एवं अभिव्यक्ति के माध्यम से कई नये प्रयोगों के साथ प्रगति के पथ पर अग्रसर है।"

मानवमन सदैव ही जिज्ञासाओं से भरा रहा, कुछ नया सीखने एवं करने की प्रवृत्ति ही उसे औरो से अलग करती है। प्रकृति में रचे बसे संगीत को अपनी अन्तर्रात्मा के साथ महसूस किया एवं उसे स्वतः ही अपनी अभिव्यक्ति प्रदान की, जब मानव की अपनी भाषा का विकास हुआ तब उसने इसी संगीत को कुछ शब्द प्रदान किए। संगीत के साथ किसी के भी मनोभावों को पैदा करना उस तक अपनी बात पहुँचाना प्रारम्भ से ही चला आ रहा है।

संगीत है शक्ति ईश्वर की, हर स्वर में बसे है भगवान।
रागी जो सुनाए रागिनी, रोगी को मिले आराम।।

हर मानव में हर समय एक जलती हुई भावना की चमक होनी चाहिए। तब यह दुनिया एक ऐसा सुखद रंगमंच मालूम होगी, जहाँ अभिनेता बिना किसी परिवर्तन के साथ हमेषा एक ही नाटक का अभिनय करते है। हम लोग आकाश में नहीं रहते है, हम पृथ्वी पर रहते है जो हमेशा परिवर्तित होता रहता है। पर्वत भी उन परिवर्तनों का प्रमाण प्रस्तुत करते हैं, जो प्रागैतिहासिक काल में हुए है। शून्याकाष परिवर्तित हुआ और अनगिनत तारों और ग्रहों को जन्म देने के लिए घूमता रहा। सब कुछ आता–जाता मालूम होता है। मानव ह्रदय प्रकृति की एक गहरी प्रशंसा के साथ बँध जाता है, तब यह मानव की सृष्टि कृति को सुन्दर आत्मा और ईश्वर को, स्वयं की सुन्दर सृष्टि को दिखाने में समर्थ होता है। स्वभाव से ही कलाकार सदैव प्रकृति के बींच स्वच्छन्द विचरण करने वाले प्रकृति प्रेमी होते है। जो प्रकृति के सतरंगे प्रकाश के अनेक वर्णो का आनन्द प्राप्त करते है। भूमि अपनी सीमा रेखा में ही सीमित नहीं अपितु वह अपनी एकता पानी के साथ भी जोड़े हुए है, जो कि भूमि की तरह ही सत्य है। वहाँ पानी बादल के टुकड़े के रूप में उठता है। चिड़ियाँ के परों की तरह फड़फड़ाता है, अपना रास्ता बनाता है, और प्रकाश के रंगों का बदलता है, यह नदियों और स्त्रोंतो की ओर जाता है। चरागाहों और जंगलों को पार करता है एवं पहाड़ियों व घाटियों को छूता है। पेड़, पौधें, जंगली जानवर और चिड़ियाँ, पुरूष और स्त्रियाँ, सारे लोग नये जीवन से भर जाते है, और इस शक्तिमान मधु के समान प्रकृति के पास आकर इसकी रक्षा करते है। मानव अपने में संगीत देता है। चिड़िया हरे पेड़ों वाली एवं पत्तों वाली शाखओं पर खुशी के गीत गाती है जो कि इस संसार को रस के जीवन के साथ आत्मा की सुन्दरता से भी भर देता है।

संगीत का प्रारम्भिक स्वरूप मानव के इर्द गिर्द ही उसके संस्कार, दैनिक जीवन, क्रिया कलाप तक सीमित था। धीरे–धीरे गीत संगीत ने सम्पूर्ण समाज का जोड़ने का कार्य किया, एक साथ मिलकर चलने की प्रेरणा दी। "संगीत" संस्कृति और हुनर का मेल है। धरा पर ऐसा कोई समाज एवं संस्कृति नहीं जिसका अपना कोई संगीत ना हो।

लोक संगीत के अन्तर्गत विभिन्न उत्सव एवं संस्कृति को जन–जन तक पहुँचाने में संगीत का बहुत बड़ा योगदान है, आम आदमी तक सीमित रहने वाला लोक संगीत आज देष एवं विदेश तक ख्याति प्राप्त कर चुका है। काव्य, कविता एवं गीत का प्रमुख तत्व भाव माना जाता है, और सबसे अधिक भावात्मक कविता "गीति" रूप में मानी जा सकती है। फूल में सुगन्ध होती है, ठीक इसी प्रकार कविता एवं गीत में भाव होते है। भावों का संचय नही "गीति" है।

भारतीय साहित्य में गीतों का सुन्दर एवं कोमल वर्ण देखने को मिलता है, गीत–चित्रण के साथ–साथ उन्हीं गीतों की अभिव्यक्ति के आधार पर चित्रकला में भी गीतों का रूप, रंग व रेखा आदि के माध्यम से सुन्दर चित्रण हुआ है। इस प्रकार गीत और चित्रण साथ–साथ होता आ रहा है। राग मालाओं में काव्य संगीत और चित्रकला का समन्वय देखने को मिलता है।

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

राग मालाओं, कविताओं और गीतों पर आधारित सभी चित्र गीतात्मक चित्र कहलायेंगे क्योंकि इन चित्रों में रागों के भाव, आलाप, उतार चढ़ाव तथा कविता एवं गीत के शब्द, स्वर, छन्द, रंग एवं रेखाओं के हल्के गहरेपन के रंगों की कोमलता को दर्शित करती है।

इस प्रकार सभी देशों (चीन, जापान, भारत, पश्चिमी ईरान एवं बंगाल) की शैली में गीतात्मक चित्र देखने को मिलते है। क्योंकि संसार के प्रत्येक मनुष्य के अवतार में किसी ना किसी रूप में स्वरों की झंकार विद्यमान रहती है और तार से तार मिलते ही वह झंकृत हो उठती है।
प्रत्येक वस्तु में लय व गति होने के कारण गीतात्मकता प्रतीत होती है।
संगीत साधना में रत कलाकार का मुख्य उद्देश्य नये सृजन का विकास करना था। नये–नये प्रयोगों के साथ संगीत हर मानव मन की अन्तर्रात्मा तक अपना स्थान बना चुका है। बिना संगीत के जीवन अधुरा सा है, मानव के साथ–साथ भगवान भी इससे अछूते नहीं रहे। भगवान के सभी स्वरूपों के साथ कोई ना कोई वाद्य–यंत्र जुड़ा रहा है, मुरली, डमरू, वीणा, शंख या एक तारा। ये सभी किसी ना किसी देवी, देवता के साथ जुड़े रहे हैं शायद भगवान भी यहीं कहना चाहते है कि मुझे समझना हो तो पहले संगीत की जानों।

भारत राग–रागियों का देष था। महाकाव्य और दीपक राग का देश था। संगीत की ऐसी साधना की राग–रागिनियों के गाते ही प्रकृति के तार झनझना उठें। हर समय में संगीत का मानव जीवन के साथ गहरा सम्बन्ध रहा। जहाँ तक आज के आधुनिक समाज या गीत, वाद्य, संगीत की बात आती है। यह आज भी समाज का महत्वपूर्ण हिस्सा है, जो मानव के सभ्य होने के पूर्व था। आज पूरे विश्व में यह अपनी गहरी छाप बनाए हुए है।

विभिन्न क्षेत्र में नये–नये प्रयोगों के साथ यह नयी उँचाइयों की ओर अग्रसर है। नयी स्वर लहरियों को जन्म देना। वाद्य–यंत्रों का विभिन्न आधुनिक प्रयोग। नयी अभिव्यक्ति के साथ नये आयाम स्थापित कर रहा है। इनके प्रयोग समाज को एक नयी दिषा, मनोवैज्ञानिक एवं भावनात्मक एवं प्राकृतिक सम्बल प्रदान कर रहे है। जो अपने आप में एक सकारात्मक नयी शक्ति का संचार एवं मानव मन की कुछ नया करने की चाह का परिणाम है। जो कि पूर्ण सफलता के साथ प्रगति के नये पथ पर अग्रसर है।

यह कटुसत्य है कि जो कला समय के साथ अपना स्वरूप बदलने में सक्षम नहीं है। उसका लुप्त प्रायः होना तय है।
अतः परिवर्तन ही जीवन एवं समाज को एक नयी दिशा प्रदान करता है।